Toppersnotes
Unleash the topper in you

कृषि – पर्यवेक्षक

(AGRICULTURE SUPERVISOR)

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर

भाग - 2

कृषि विज्ञान

(पशुपालन, उद्यान एवं शस्य विज्ञान)

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

पशुपालन

1. शब्दावली 1
2. पशुपोषण 2
3. पशु आयु व भार ज्ञात करना 8
4. पशु प्रजनन 11
5. गाय व भैंस की नस्लें 14
6. भेड व बकरी की नस्लें 22
7. ऊँट (नस्ल व प्रबंधन) 29
8. मुर्गीपालन 31
9. पशु स्वास्थ्य 40
10. प्रमुख औषधियाँ व उपयोग 47
11. डेयरी तकनीक 50
12. दूध संसाधन 53
13. राजस्थान में पशुपालन से सम्बन्धित योजनाएँ 55

उद्यान विज्ञान

1. सब्जी उत्पादन 58
2. फल उत्पादन 96
3. फ्लोरीकल्चर व आंलकृत बागवानी 120
4. फल व सब्जी परिरक्षण 129
5. बाग प्रंबधन 141
6. पादप वृद्धि नियामक 145

7. प्रतिकूल मौसम व निराकरण 148
8. औषधीय पादप 150
9. उद्यानिकी विकास की विभिन्न योजनाएँ 156

शस्य विज्ञान

1. मृदा उर्वरता, उत्पादकता, अपरदन 159
2. कृषि जलवायु खण्ड 163
3. पोषक तत्व 164
4. शुष्क कृषि, फसल चक्र व मिश्रित फसलें 178
5. मौसम एवं जलवायु 185
6. सिंचाई, जल मांग व जल निकास 194
7. बीज 205
8. खरपतवार 211
9. जैविक खेती 220
10. भू परिष्करण 229
11. फसल उत्पादन 232
12. कृषि विकास की विभिन्न योजनाए 268

कृषि पर्यवेक्षक (विगत वर्षो के प्रश्नपत्र)

पशुपालन

गाय की नस्लें

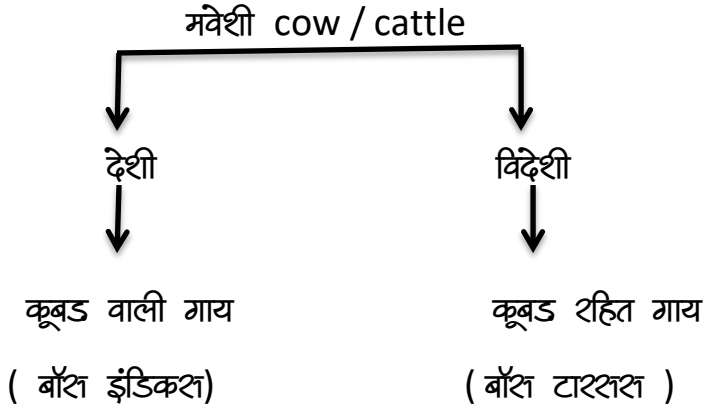

- बच्चा पैदा करने की क्रिया ⟶ कॉल्विग
- समूह ⟶ हर्ड (Herd)
- मांस ⟶ बीफ
- बछडे का मांस⟶ वील
- संभोग की क्रिया⟶ सर्विंग

देशी नस्लें

Indian Cattle

दुधारू	द्वि–प्रयोजनीय	भारवाही
सर्वाधिक दूध – दूध उत्पादन (1200–1500लीटर/ब्यात)		नर – उत्तम
उत्पादन – भार ढोने / कृषि कार्यों के लिए		भारवाही

दुधारू **(Milk Breed)**

साहीवाल नस्ल

- उत्पत्ति स्थान – माउंट गोमरी (पाकिस्तान)
- अन्य नाम – लोला, मुल्तानी, तेली
- शारीरिक विशेषता – लाल रंग
- त्वचा – ढीली होने के कारण – तोला
- सबसे अधिक दूध देने वाली एवं सबसे मीठा दूध देने वाली नस्ल
- उत्पादन दूध 2000 से 2500 लीटर / ब्यात
- fat – 4.5
- लैक्टोस – 5 प्रतिशत

गिर नस्ल

- उत्पत्ति स्थान – काठियावाड (गुजरात)
- अन्य नाम – भाहमान, रेडी, अजमेरा
- शारीरिक विशेषता
  - रंग – लाल व सफेद जिसके ऊपर काले सफेद धब्बे हो
  - सींग – अर्द्धचन्द्राकार
  - कान लंबे एवं पत्ते के समान लटकते हुए
  - रोग प्रतिरोधक क्षमता सबसे अधिक
  - शरीर का भार
    - नर 550 kg
    - मादा 450 kg
- उत्पादन
  - दूध उत्पादन – 1600 से 1800 लीटर /ब्यात
- यह नस्ल विदेशों में बीफ के लिए पाली जाती है ।

रेड सिंधी

- उत्पत्ति स्थान – कराची (पाकिस्तान)
- अन्य नाम – कराची रेड, माही
- शारीरिक विशेषता
  - रंग – गहरा लाल
  - इसके चेहरे की बनावट बुद्धिमान प्रवृत्ति की होती है ।
  - गर्मी के प्रति प्रतिरोधी नस्ल
- उत्पादन
  - दुग्ध उत्पादन – 1250 से 1800 लीटर/ब्यात

देवली

- उत्पत्ति स्थान – महाराष्ट्र, कर्नाटक
- अन्य नाम – डेकानी, डांगर पति
- यह नस्ल त्रि–संकरण से प्राप्त की गई है ।
- देवली – गिर + डांगी+ स्थानीय नस्ल
- शारीरिक विशेषता
  - रंग – सफेद, काले अनियमित धब्बों के साथ
  - उत्पादन –दूध उत्पादन 1500 से 1600 लीटर/ब्यात

द्वि-प्रयोजनीय नस्लें

हरियाणवी

- उत्पत्ति स्थान – रोहतक, हिसार (हरियाणा)
- शारीरिक विशेषता
  - सबसे अच्छी द्विकाजी नस्ल
  - रंग – सफेद, धूसर
  - पूँछ – लंबी, डिरा पर काले बालों का गुच्छा
- उत्पादन
  - दूध 1200 से 1400 लीटर/ब्यात

थारपारकर (राजस्थान में)

- अन्य नाम –सफेद सिंधी, ग्रे सिंधी ,थारी
- उत्पत्ति – सिंध (पाकिस्तान)
- रंग – सफेद
- रेगिस्तानी परिस्थितियों में भी अच्छा दूध उत्पादन देना
- कान लंबे चौंडे एवं लटकते हुए
- दुग्ध उत्पादन – 1800 से 2000 लीटर/ब्यात
- राजस्थान में सबसे अच्छी द्विकाजी नस्ल

राठी

- उत्पत्ति स्थान – राठ क्षेत्र (अलवर)
- मुख्यतः गंगानगर एवं बीकानेर में पाई जाती है ।
- यह राजस्थान की कामधेनु के नाम से जानी जाती है ।
- यह राजस्थान की सबसे अच्छी दुधारू नस्ल है ।
- दुग्ध उत्पादन – 1200 से 1500 लीटर/ब्यात

कांकरेज

- अन्य नाम – बनियार
- उत्पत्ति स्थान – कच्छ का रण (गुजरात)
- यह भारत की सबसे लंबी भारी द्विकाजी नस्ल है ।
- इसके सींग लंबे होते है । इस कारण 90% कैंसर होने की संभावना रहती है ।
- यह नस्ल सवारी चाल के लिए प्रसिद्ध है ।
- दुग्ध उत्पादन 1700 से 1800 लीटर/ब्यात

मेवाती

- अन्य नाम –कोली
- उत्पत्ति स्थान – गुरूग्राम, मथुरा
- शारीरिक विशेषता
  - शरीर का रंग सफेद होता है । लेकिन सिर, नाक, कंधे हल्के काले रंग के होते है ।
- दूध उत्पादन – 1000 से 1500 लीटर/ब्यात

भारवाही नस्लें

नागौरी

- उत्पत्ति स्थान – नागौर, जोधपुर (राजस्थान)
- शारीरिक विशेषता
  - रंग – सफेद से हल्का भूरा
- राजस्थान की प्रमुख भारवाही नस्ल
- इस नस्ल के बैल तेज दौडने के लिए प्रसिद्ध है ।
- इस नस्ल की मुख्य विशेषता मजबूत गर्दन एवं चौडा सीना है ।
- दूध उत्पादन – 600 से 800 लीटर/ब्यात

मालवी

- उत्पत्ति स्थान – मालवा क्षेत्र (मध्यप्रदेश)
- विस्तार – हाडौती क्षेत्र (कोटा, बूंदी, झालावाड)
- दूध उत्पादन 700 से 900 लीटर/ब्यात

विदेशी नस्लें

जर्सी

- उत्पत्ति स्थान – इंग्लिश चैनल
- शारीरिक विशेषता
  - सबसे छोटी विदेशी नस्ल
  - रंग– लाल, भूरा, सफेद, धब्बे
- विदेशी गायों में सर्वाधिक वसा – 5 से 5.25%
- दूध उत्पादन – 4000 से 4200 लीटर / ब्यात
- दुग्ध काल – 365 दिन

होलिस्टन फ्रिडियन

- उत्पत्ति स्थान – हॉलैण्ड (नीदरलैंड)
- शारीरिक विशेषता –
- विश्व की सर्वाधिक भारी एवं लंबी नस्ल

- भार – नर 900 से 1000 किलोग्राम
  - मादा – 750 से 800 किलोग्राम
- दूध उत्पादन – 5000 से 6000 लीटर/ ब्यात
- क्यूबा में इस नस्ल का दूध उत्पादन 23500 लीटर/ ब्यात देखा गया है । अब तक का सर्वाधिक
- सबसे कम वसा – 3.5 से 4%

ब्राउन स्विस

- उत्पत्ति स्थान– स्विजरलैंड
- इस नस्ल का उपयोग दूध उत्पादन, बीफ उत्पादन और कृषि कार्यों के लिए किया जाता है ।
- दूध उत्पादन – 4000 से 5000 लीटर/ ब्यात

आयर शायर

- उत्पत्ति स्थान – स्कॉटलैंड
- सर्वाधिक सुंदर एवं आकर्षक नस्ल
- यह नस्ल अधिक फुर्तीली होती है । लेकिन प्रबंधन करना कठिन होता है ।
- दुग्ध उत्पादन – 4800 लीटर/ ब्यात

रेडडेन

उत्पत्ति स्थान – डेनमार्क

संकर नस्लें

1. करण स्विस – साहीवाला x ब्राउन स्विस (करनाल NDRI)
2. करंट प्राइस – थारपारकर X H . F (करनाल NDRI)
3. फ्रिजवाल – साहीवाला X H . F (मेरठ, उत्तरप्रदेश)
4. जर सिंधी – सिंधी X अरसी (इलाहाबाद कृषि विश्व विद्यालय U.P)
5. राठी – साहीवाल X थारपारकर X रेड सिंधी

कुछ महत्वपूर्ण बिंदु

दुनिया की सबसे छोटी गाय की नस्ल वेच्युल है । जिसका नाम गिनीज बुक में दर्ज हो चुका है ।

विभिन्न प्रजनन केंद्र

- गाय नस्ल सुधार संस्थान – बरसी (जयपुर)
- जर्सी गाय का प्रजनन केंद्र – बरसी (जयपुर)
- थारपारकर प्रजनन केंद्र – सूरतगढ (गंगानगर)
- हरियाणा गाय प्रजनन केंद्र – भरतपुर
- राठी गाय प्रजनन केंद्र – नोहर (हनुमानगढ)
- गिर नस्ल प्रजनन केंद्र – झालावाड
- मेवाती नस्ल प्रजनन केंद्र – अलवर

भैंस (Buffalo)

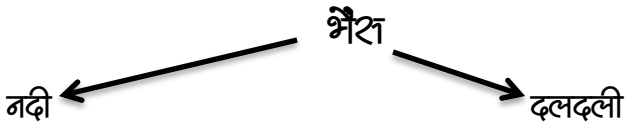

• पानी में तैरना पसंद	कीचड में बैठना पसंद करती है
• गर्मी सहन करने की क्षमता	गर्मी सहन करने की क्षमता
• गुणसूत्र संख्या 50	गुणसूत्र 48
• रंग – काला	रंग – तांबे का रंग
• दुग्ध उत्पादन के लिए पालना	पालने का उद्देश्य है– मांस

- बच्चे पैदा करने की क्रिया – कार्विंग
- संभोग की क्रिया – सर्विंग
- पशुओं का समूह है – हर्ड (Herd)
- मांस – बीफ

मुर्रा

- अन्य नाम – दिल्ली बफेलो, ब्लैक ब्यूटी
- उत्पत्ति स्थान – दिल्ली, हरियाणा, पंजाब
- राजस्थान– अजमेर
- शारीरिक विशेषताएं
  - रंग – कालाशाह
  - पूँछ के ऊपर सफेद धब्बे होते हैं ।
  - इसके सींग जलेबी के आकार के होते हैं ।
- उत्पादन
- दूध उत्पादन – उत्तरी भारत में सर्वाधिक दूध उत्पादन करने वाली नस्ल 2000 से 2500 लीटर/ब्यात
- वसा – 7%

जाफराबादी

- उत्पत्ति स्थान– काठियावाड (गुजरात)
- अन्य नाम –मिनी एलीफेंट
- शारीरिक विशेषता
  - भैंस की सबसे बडी एवं भारी नस्ल
- सबसे कम दूध काल में अधिक दूध उत्पादन
- दुग्ध काल– 7 महीने
- दुग्ध उत्पादन– 1800 से 2700 लीटर/ब्यात

- वसा 7 से 9%

भदावरी

- उत्पत्ति स्थान – आगरा एवं इटावा जिला (उत्तरप्रदेश) तथा भदावर, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)
- शारीरिक विशेषता
- रंग– ताँबे जैसा तथा दो सफेद लाइने गर्दन के नीचे पाई जाती है ।
  - सींग – छोटे एवं मुडे हुए
- इसके Bullock अधिक गर्मी सहनशील होते है ।
- दुग्ध उत्पादन – 1100 से 1200 लीटर/ब्यात
- इस नस्ल में सर्वाधिक मात्रा में वसा पाई जाती है । अधिकतम 12 से 13%

सुरती

- उत्पत्ति स्थान – बडौदा (गुजरात)
- शारीरिक विशेषता – इसके सींग धरानी आकार के
- दुग्ध उत्पादन – 900 से 1300 लीटर/ब्यात
- वसा – 7.5%
- यह राजस्थान में बांसवाडा व डूंगरपुर में पाई जाती है ।

नीली

- उत्पत्ति स्थान – फिरोजपुर (पंजाब) तथा मोंटगोमरी (पाकिस्तान)
- शारीरिक विशेषता
  - इसकी आंखें सफेद पाई जाती है । इसलिए इन्हें वाइट आइस (White eyes) कहते है ।
  - शहरी क्षेत्रों के लिए सबसे अच्छी नस्ल
  - माथे के ऊपर सफेद टीका
  - यह नस्ल रावी व सतलज नदी के आसपास पाई जाती है । इसलिए इसे नीली रावी कहते है ।
- दुग्ध उत्पादन – 1500 से 1800 लीटर/ब्यात
- वसा – 4%

मेहसाणा

- उत्पत्ति स्थान – मेहसाणा एवं बडौदा क्षेत्र (गुजरात)
- शारीरिक विशेषता
  - मेहसाणा – मुर्रा X सुरती
- सबसे लंबा दुग्ध काल 352 दिन
- वसा 6 से 7%
- दुग्ध उत्पादन – 1300 से 1500 लीटर/ब्यात

नागपुरी

- उत्पत्ति स्थान– नागपुर (महाराष्ट्र)
- अन्य नाम – इलीचपुरी, मराठवाडा, बैरागी
- शारीरिक विशेषता
  - तलवार की आकृति के सींग
- दुग्ध उत्पादन 1000 लीटर/ब्यात
- वसा – 7%

टोडा

- उत्पत्ति स्थान – दक्षिण भारत की नीलगिरी पहाड़ियां
- संपूर्ण शरीर के ऊपर पतली भारी बालों की परत
- यह नस्ल झुण्ड बनाकर बाघ से अपनी सुरक्षा कर सकती है ।

पण्डनपुरी

उत्पत्ति स्थान– महाराष्ट्र

कुछ महत्वपूर्ण बिंदु

- भैंस अनुसंधान संस्थान – हिसार (हरियाणा)
- भैंस प्रजनन केंद्र – वल्लभनगर (उदयपुर)

भेड़ नस्लें

- बच्चा देने की क्रिया – लेम्बिंग
- मांस– मटन
- संभोग –टपिंग
- पशु का समूह है – फ्लोक

नस्लें

1. मारवाडी

- उत्पत्ति स्थान – जोधपुर, पाली जिला (राजस्थान)
- शारीरिक विशेषता –
  - यह नस्ल रेगिस्तान में पहाडी क्षेत्रों के लिए सबसे अच्छी है ।
  - रोग प्रतिरोधक क्षमता सबसे अधिक होती है ।
  - इसके चेहरे का रंग काला होता है ।
- उत्पादन
  ऊन उत्पादन – 1.5 से 2.3 किलोग्राम प्रतिवर्ष
- भार
  - नर– 27 से 36 किलोग्राम
  - मादा– 23 से 30 किलोग्राम

2. चोकला

- उत्पत्ति स्थान– शेखावाटी क्षेत्र सीकर, चूरू, झुंझुनू
- अन्य नाम – राजस्थान की मेरिनो, शेखावाटी
- शारीरिक विशेषता
  - शरीर का रंग सफेद होता है । लेकिन चेहरे का रंग काला होता है ।
- यह नस्ल सबसे अच्छी गुणवत्ता की ऊन उत्पादन करती है ।
- राजस्थान की यह सींग रहित नस्ल है ।
- ऊन उत्पादन – 1.5 से 2.5 किलोग्राम/वर्ष

3. मालपुरा

- उत्पत्ति स्थान – टोंक मालपुरा तहसील
- विस्तार – टोंक, बूंदी, जोधपुर, अजमेर
- शारीरिक विशेषता –
  - यह नस्ल मांस व ऊन दोनों के लिए पाली जाती है । लेकिन ऊन निम्न गुणवत्ता का होता है ।
  - यह सींग रहित नस्ल है ।
  - इसके पैर, चेहरा एवं पेट पर बाल नहीं पाए जाते है ।

- उपयोगिता
  - ऊन उत्पादन – 1.1 से 1.6 किलोग्राम/प्रतिवर्ष
- भार
  - नर – 30 से 34 किलोग्राम
  - मदा – 25 से 30 किलोग्राम

4. मेरिनो

- विदेशी नस्ल
- उत्पत्ति स्थान – स्पेन
- शारीरिक विशेषता
  - इसकी मादा बिना सींग की होती है तथा नर में सींग पाए जाते है ।
  - यह ऊन उत्पादन के लिए सबसे अच्छी नस्ल है ।
  - इसकी ऊन पतली एवं लंबी होती है ।
- उपयोगिता
  - ऊन उत्पादन – 5 से 9 किलोग्राम/प्रतिवर्ष
  - इस नस्ल के द्वारा एवं इस नस्ल की संकर नस्लों द्वारा विश्व का लगभग 80% ऊन प्राप्त किया जाता है ।
- भार
  - नर – 90 किलोग्राम
  - मदा – 70 किलोग्राम

5. करकुल

- उत्पत्ति स्थान – मध्य एशिया
- शारीरिक विशेषता
  - इसकी मादा बिना सींग के होती है तथा नर में सींग पाए जाते है ।
  - यह माँस के लिए उपयोगी है ।
- भार
  - नर – 90 किलोग्राम
  - मादा – 60 किलोग्राम
- इसके मेमने छोटी सी उम्र में कारपेट बनाने के उद्देश्य से मार दिए जाते है ।

6. अवि वस्त्र

- उत्पत्ति स्थान – यह नस्ल केंद्रीय भेड एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर, मालपुरा (टोंक) से विकसित की गई है ।
- अवि वस्त्र – रेम्बुलेट (नर) X चोकला (मादा)
- भार
  6 महीने की उम्र में भार – 12 किलोग्राम
  1 वर्ष की उम्र में भार – 23 किलोग्राम
- उपयोगिता

ऊन उत्पादन – 2 से 4 किलोग्राम/प्रतिवर्ष

- वार्षिक जन्म दर – 93%

7. अविकालीन

- उत्पत्ति स्थल – केंद्रीय भेड एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर मालपुरा (टोंक) ।
- अविकालीन – मेरीनो X मालपुरा
- यह नस्ल उत्तम प्रकार की ऊन उत्पादन करती है । जिसका उपयोग कालीन बनाने के लिए किया जाता है ।
- उपयोगिता
  - ऊन उत्पादन– 1.13 किलोग्राम / छह माह
- टपिंग – 97%
- लेम्बिंग – 21%

8. डैसलमेरी

- उत्पत्ति – डैसलमेर
- विस्तार – जोधपुर, बाडमेर, डैसलमेर
- विशेषता
  - लंबी पूंछ, लंबे कान तथा रोमन नाक होती है ।
  - सबसे लंबी नस्ल– राजस्थान
  - रेगिस्तानी नस्ल
- ऊन उत्पादन – 1.8–3.2 किलोग्राम/प्रतिवर्ष

9. सोनाडी

- उत्पत्ति – उदयपुर व कोटा संभाग
- यह त्रिप्रयोजनीय नस्ल है (ऊन, मांस, दूध)
- सबसे भारी नस्ल – राजस्थान
- दुग्ध उत्पादन – 1.5 किलोग्राम/प्रतिवर्ष

अन्य नस्लें

1. पूगल
   - अन्य नाम – बीकानेरी
   - कालीन बनाने में उपयोगी ।

2. डेकानी
   - महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश
   - मांस उत्पादन हेतु

3. नेल्लोर
   - आंध्र प्रदेश
   - भारत की सबसे ऊंची नस्ल

4. मगरा
   - अन्य नाम – बीकानेरी चोकला

5. गद्दी
   - जम्मू
   - अन्य नाम भाभरवाल
   - रामपुर बुरयार
   - बेलारी
   - नीलगिरी

महत्वपूर्ण बिंदु

1. प्लसिंग
   - गर्भ काल के समय जो भेड को अतिरिक्त भोजन दिया जाता है ।

2. डोकिंग
   - पूँछ काटने की क्रिया (एक से दो सप्ताह की उम्र)

बकरी

- बच्चा पैदा करने की क्रिया – किडिंग
- संभोग की क्रिया – सर्विंग
- बकरी का समूह है – फ्लोक
- मांस – चेवन

1. जमुना पुरी
   - उत्पत्ति स्थान – इटावा (यूपी)
   - विस्तार – चंबल, यमुना नदी के आसपास का क्षेत्र
   - शारीरिक विशेषता
     रोमन नाक पाई जाती है या चेहरे की बनावट तोते जैसी होती है ।
     द्विप्रयोजनीय नस्ल (मांस व दूध)
     गर्दन लंबी, पिछले पैरों पर बाल होते हैं ।
     लम्बे लटकते कान ।
   - उपयोगिता
     - दूध उत्पादन – 1.5 से 2 किलोग्राम/प्रतिदिन
     - इस नस्ल को जादुई बकरी कहते हैं ।
     - वसा 3.5 से 5%

2. बारबरी
   - उत्पत्ति स्थान – पूर्वी अफ्रीका (सोमालिया का बरबरा क्षेत्र)
   - विस्तार – दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश
   - शारीरिक विशेषता
     - रंग – सफेद
     - स्टॉल के लिए उपयुक्त
     - सिटी गोट के नाम से जानी जाती है ।
     - एक बार में 2 बच्चे देती है ।
   - दूध उत्पादन – 1 से 1.5 किलोग्राम/प्रतिदिन
   - वसा – 4.5 से 5%

3. बीटल
   - उत्पत्ति स्थान – गुरदासपुर (पंजाब)
   - विस्तार – पंजाब, पाकिस्तान
   - शारीरिक विशेषता
     - नर पशु में ढाढी पाई जाती है ।
     - लंबे कान एवं सींग पीछे की ओर मुडे हुए होते हैं ।
     - जमुनापुरी नस्ल के समान ।

- उपयोगिता
  - द्विप्रयोजनीय नस्ल
  - दूध –1.8 किलोग्राम प्रति दिन
  - वसा – 4.5%

4. टोकन बर्ग

- उत्पत्ति स्थान – टोकनबर्ग बडी (स्विजरलैंड)
- शारीरिक विशेषता
  - सींग रहित नस्ल एवं रंग चॉकलेट जैसा ।
  - चेहरे के ऊपर दो भूरी लाइने पाई जाती है ।
  - यह दुधारू नस्ल है ।

- उपयोगिता
  - दूध –5 से 6 किलोग्राम प्रति दिन
  - वसा – 3–4%
  - इस नस्ल में नियमित रूप से दूध देने की क्षमता (लगभग 2 वर्ष)

5. सिरोही

- उत्पत्ति स्थान –सिरोही (राजस्थान)
- विस्तार – अजमेर, भीलवाडा, उदयपुर
- विशेषता
  - पीठ पर हल्का झुकाव होता है ।
  - कान लंबे बाल लटकते हुए ।

- उपयोगिता
  - द्वि – प्रयोजनीय नस्लें
  - दुग्ध उत्पादन –1 से 1.5 किलोग्राम प्रति दिन

अन्य महत्वपूर्ण

1. सानेन

- उत्पत्ति स्थान – स्विजरलैंड
- दूध की रानी
- नर व मादा दोनों में ढाढी पाई जाती है ।
- दूध उत्पादन – 800 लीटर/ब्यात

2. अंगोरा

- उत्पत्ति स्थान – टर्की (मध्य एशिया)
- अच्छे प्रकार का रेशा जिसे मोहेर कहते है ।

- ब्रंगोर किस्म की ऊन – खरगोश से प्राप्त

3. मारवाडी
   - उच्च रोग प्रतिरोधक क्षमता

4. मालबरी – केरल

5. ब्लैक बंगाल – पश्चिमी बंगाल

6. चंग चगी–
   - अन्य नाम – पश्मीना
   - पश्मीना ऊन प्राप्त
   - लद्दाख या हिमाचल प्रदेश क्षेत्र में पाई जाती है ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

ऊंट

एक कूबड वाले भारत में पाए जाते हैं दो कूबड वाले आदर्श क्षेत्र भारत में – लद्दाख

1. बीकानेरी

- उत्पत्ति स्थान – बीकानेर
- बीकानेरी – सिंधी X बलूची
- शारीरिक विशेषता
  - ऊंचाई 10 से 12 फीट (सबसे ऊंची नस्ल)
  - विश्व की सबसे सुंदर नस्ल ।
  - द्विप्रयोजनीय नस्ल
  - भार ढोने एवं कृषि कार्य के लिए
  - इस नस्ल की मुख्य विशेषता स्टॉप है ।
  - रंग –गहरा भूरा या काला ।

2. जैसलमेरी

- उत्पत्ति स्थान – जैसलमेर
- शारीरिक विशेषता –
  - यह माना जाता है कि यह नस्ल थारपारकर नस्ल से विकसित की गई है ।
  - थारपारकर– जो कि पाकिस्तान के सिंध जिले में पाए जाते है ।
  - रंग – हल्का भूरा
- ऊंचाई – 7 से 9 फीट
- इसकी आंखें बडी एवं चमकीली होती है ।
- इसके कान छोटे एवं नजदीक होते है ।
- इस नस्ल के पैरों में छोटे एवं हल्के तलवे पाए जाते है जिससे तेज गति से चलने में मदद मिलती है ।
- उपयोगिता
  - यह नस्ल सवारी के लिए उपयोगी है ।
  - एक प्रशिक्षित ऊंट एक रात में 100 से 140 किलोमीटर की यात्रा तय करता है ।
- यह नस्ल पुलिस व आर्मी के लिए उपयोगी है ।

3. मेवाडी

- उत्पत्ति स्थान – मेवाड क्षेत्र (उदयपुर, चित्तौडगढ, राजसमंद)
- शारीरिक विशेषता– यह मध्यम आकार की नस्ल है ।
  - इसकी आंखें आलसी एवं छोटी होती है ।
  - इसके पैर छोटे एवं उसके तलवे कठोर होते है ।
  - इस नस्ल की मुख्य विशेषता यह है कि इसका नीचे वाला होंठ लटका हुआ होता है ।
  - इसके शरीर पर घने बाल पाए जाते है ।

- उपयोगिता
  - ➢ सामान ढोने एवं कृषि कार्य के लिए उपयोगी।
  - ➢ इसकी मादा 4 से 6 लीटर दूध प्रतिदिन देती है ।
  - ➢ इस नस्ल की चाल 3 से 5 मील प्रति घंटे होती है ।

ऊंट का प्रबंधन

आहार प्रबंधन

- 100 किलोग्राम शरीर का भार ढोने पर- 1.5 से 2 किलोग्राम शुष्क पदार्थ प्रतिदिन
- लगभग 60 से 70% खर्चा ऊंट के भोजन पर लगता है ।
- 1 दिन में 18 से 36 लीटर पानी पीता है ।

क्र.संख्या	उम्र	चारा(kg / d)	दाना (kg / d)	नमक की मात्रा
1.	< 1 वर्ष	2	0.5	15
2.	1–2 वर्ष	4	1	25
3.	2–3 वर्ष	6	1.5	35
4.	> 3 वर्ष	8	2	45
5.	प्रजनन हेतु नर	10	2.5–3	50

प्रजनन प्रबंधन

- यौनारंभ – 3 से 4 वर्ष
- प्रथम बच्चे को जन्म देने की आयु –5 से 6 वर्ष
- एक बच्चे से दूसरे बच्चे के जन्म के बीच का अंतराल –2 वर्ष
- मद चक्र –10 दिन
- मद काल – 3 से 5 दिन
- मद काल पहचान करने की अवस्था –गोला / रट/ मस्थ
  - ➢ प्रजनन का समय – नवंबर से मार्च
- आवास प्रबंधन
  - ➢ क्षेत्रफल 70 से 80 वर्ग फीट

कुछ महत्वपूर्ण बिंदु

- राष्ट्रीय ऊंट अनुसंधान संस्थान –जोहडबीड (बीकानेर)
- ऊंट विकास बोर्ड – जोधपुर
- ऊंट को 30 जून 2014 को राज्य पशु का दर्जा दिया गया ।
- ऊंट को रेगिस्तान का जहाज कहते हैं ।
- ऊंटनी का दूध मधुमेह के रोगियों के लिए उपयोगी है ।